प्रथम अध्याय

"जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रथम अध्याय

''लेखक जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

विषय-प्रवेश -

साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत घनिष्ठ होता है। रचनाकार अपनी कृति में तत्कालिन समाज का यथावत चित्रण करता है। समाज से विमुख होकर साहित्यकार कोई रचना ही नहीं कर सकता। आज विभिन्न साहित्यिक विधाओं के माध्यम से समाज एवं व्यक्ति के अंतःसंबंधों का विवेचन-विश्लेषण किया जा रहा है। किसी भी कृति में रचनाकार के व्यक्तित्व की झलक दिखाई देती है। रचनाकार अपनी अनुभूति को प्रामाणिकता से चित्रित करने का प्रयास करता है।

साहित्यकार के साहित्य को समग्र रूप से समझने के लिए उसके जीवन एवं व्यक्तित्व को समझना निश्चय ही सहायक सिद्ध होता है। कलाकार का संपूर्ण जीवन कला कृतियों में बिखरा हुआ होता है। कलाकार अपने जीवनानुभव को, सुख-दुःखों को तथा कटु-मधुर स्मृतियों को अपनी सुंदर कल्पनाओं में ढालकर प्रस्तुत करता है। अतः ऐसा कहा जाता है कि वक्ता का परिचय उसके वक्तव्य से होता है। किसी गायक की पहचान उसके सूरों को सुनने के बाद होती है, ठीक उसी प्रकार किसी रचनाकार के व्यक्तित्व को आप जानना चाहते हैं, तो उनकी कृतियाँ ही उनके व्यक्तित्व की पहचान होती है। इस संदर्भ में गजानन माधव मुक्तिबोध के विचार द्रष्टव्य हैं- ''कवि कथ्य के माध्यम से अपने अनजाने अपना चरित्र कर जाता है।''[1] इससे स्पष्ट होता है कि रचनाकार के जीवन एवं व्यक्तित्व की उपेक्षा करके उसकी रचनाओं को समग्रतः हृदयगंम नहीं किया जा सकता। अतः लेखक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को देखना आवश्यक होता है।

1.1 व्यक्तित्व -

लेखक जगदीशचंद्र बहुमुखी प्रतिभासंपन्न व्यक्ति थे। प्रगतिशील रचनाकारों में एक सशक्त रचनाकार के रूप में इनका नाम लिया जाता है। जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व

---

1. गजानन माधव मुक्तिबोध - कामायनी एक पुनर्विचार, पृष्ठ - 149

बहुआयामी रहा है। व्यक्तित्व देखते समय व्यक्ति की शारीरिक बनावट, जीवनमूल्य, मनोवृत्तियाँ, रहन-सहन, जन्म-मृत्यु, परिवार आदि बातों का अध्ययन किया जाता है। उनके व्यक्तित्व के बारे में डॉ. सरोज मार्कण्डेय के विचार यहाँ दृष्टव्य हैं- ''किसी व्यक्ति की विशेषता, भिन्नता, विचित्रता उसके व्यक्तित्व में स्पष्ट होती है, अतएव व्यक्तित्व व्यक्ति के पूर्ण परिचय का प्रतीक है। व्यक्तित्व मात्र शारीरिक विशेषताओं का परिचायक नहीं अपितु व्यक्ति की समस्त विशेषताओं, मानसिक, सांस्कृतिक पूँजीभूत रूप है।''[1]

उपर्युक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व शारीरिक एवं मानसिक प्रवृत्तियों का समुच्चय है, जो किसी भी व्यक्ति को अन्य व्यक्तियों से अलग करता है। साहित्यकार के व्यक्तित्व की जो छाप दूसरों पर पड़ती है, वह उसकी रचनाओं से अविभाज्य होती है।

1.1.1 जन्म -

लेखक जगदीशचंद्र का जन्म 23 नवंबर, 1930 ई. को पंजाब प्रांत, होशियारपुर जिले के घोड़ेवाहा नामक ग्राम में हुआ। अपने जन्मस्थान के बारे में जगदीशचंद्र स्वयं बताते हैं कि ''पंजाब के जिला होशियारपुर की दसूहा तहसील में जालंधर पठानकोट हाई-वे के इक्कीसवें मील पर सड़क के पश्चिम में एक छोटा-सा गाँव है, रलह्न मेरे ननिहाल का गाँव। इसी सड़क पर पच्चीसवें मील पर टांडा उड़मुड़ से साढ़े चार मील दूर पूर्व उत्तर में एक गाँव है, घोड़ेवाहा- मेरे दधियाल का गाँव।''[2] प्रस्तुत कथन से अपने जन्मगाँव के संबंध में लेखक के विचार व्यक्त हुए हैं।

1.1.2 बचपन -

लेखक जगदीशचंद्र का बचपन और लड़कपन उनके ननिहाल रलहन नामक ग्राम में बीता। रलह्न गाँव में अधिकांश कृषक परिवार थे। रलह्न गाँव में जाति-भेद उच्चकोटि का था। बचपन में लेखक के मन में दलित बस्ती के बारे में कौतुहल था। घर का माहौल उच्चवर्गीय होने से दलित बस्ती में जाने पर लेखक जगदीशचंद्र को रोक लगाई थी।

---

1. डॉ. सरोज मार्कण्डेय - निराला साहित्य में युगीन समस्याएँ, पृष्ठ - 12
2. सं. तरसेम गुजराल, विनोद शाही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 23

फिर भी लेखक जगदीशचंद्र चोरी-छुपे वहाँ पहुँच जाते थे और दलित लड़कों के साथ खेलना तथा उनके साथ कभी-कभी खाना भी खाते थे। अमरचंद नाम का दलित मित्र था, जिसके घर जगदीशचंद्र चोरी-छुपे खाना खाते थे।

नानी के द्वारा जातिविशेष की हिदायत देने पर जगदीशचंद्र के बालमन में प्रश्न उठता था कि "एक ही जमीन में कुओं से निकलनेवाला पानी, एक-से खेतों में उपजनेवाला अनाज और साग-सब्जी इस बस्ती में पहुँचने और पकने के बाद भिन्न और सवर्ण जातियों के खाने-पीने और स्पर्श के अयोग्य क्यों हो जाते हैं ?"[1] इस प्रकार के प्रश्न लेखक जगदीशचंद्र के बालमन को व्यस्त करते थे। इस कट्टर जाति-भेद के परिवेश में लेखक जगदीशचंद्र का बचपन बीत गया।

1.1.3 परिवार -

लेखक जगदीशचंद्र का परिवार उच्चवर्गीय था। घर का प्रमुख व्यवसाय खेती तथा पशुपालन था। उनके पिता का नाम करमचंद वैद्य तथा माता का नाम त्रिकमदेवी था। लेखक जगदीशचंद्र को विश्वामित्र नाम के एक भाई थे।

1.1.4 विवाह -

लेखक जगदीशचंद्र का विवाह श्रीमती क्षमा वैद्य के साथ हुआ। एक अर्धांगिनी के नाते श्रीमती क्षमा वैद्य ने जगदीशचंद्र का सफल साथ दिया। अपने पति के लेखन-कार्य के आगे उन्होंने अपनी आकांक्षाओं को सीमित रखा। किसी भी पारिवारिक कार्यक्रम में श्रीमती क्षमा वैद्य को अकेली जाना पड़ता था, परंतु उन्होंने इसका कभी बुरा नहीं माना। अपने पति की सेवा के लिए सदैव रत रहने में ही श्रीमती क्षमा वैद्य ने अपने जीवन की सार्थकता मानी।

1.1.5 संतान -

लेखक जगदीशचंद्र के दो बेटे और एक बेटी है। उनके बड़े बेटे का नाम अनुराग है, जो आज पंजाब जालंधर जिले में प्लास्टिक का व्यापार करते हैं। इसके बाद

---

1. सं. तरसेम गुजराल एवं विनोद साही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 24

पराग और आरती दोनों जुडवाँ बच्चे पैदा हुए। पराग वैद्य अपने बड़े भाई के व्यापार में मदद करते हैं तथा आरती का आंतरजातीय विवाह हुआ है।

1.1.6 शिक्षा -

लेखक जगदीशचंद्र की प्रारंभिक शिक्षा ननिहाल रलहन गाँव में पूरी हुई। हाईस्कूल तक की पढ़ाई के लिए रलहन गाँव से पाँच कि. मी. दसूहा नामक गाँव में हररोज पैदल जाना पड़ता था। स्नातक तक की शिक्षा होशियारपुर से पूरी की। डी. ए. वी. कॉलेज जालंधर से अर्थशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर हुए। लेखक जगदीशचंद्र अर्थशास्त्र के छात्र थे।

1.1.7 नौकरी -

पोस्ट ग्रॅज्युएशन के बाद आरंभ में प्रुफ रीडिंग जैसे कार्यों में लेखक जगदीशचंद्र संलग्न रहे। नौकरी की तलाश में दिल्ली आ गए। दिल्ली में पहली विधिवत नौकरी आकाशवाणी में सन् 1955 ई. में प्रेस इन्फर्मेशन ब्यूरो से सम्बद्ध रहे। सन् 1957 ई. में उनका तबादला श्रीनगर हो गया। छः साल वहाँ रहकर फिर 1962 में वे दिल्ली वापस आ गए।

इन पाँच-छः वर्षों में जमाना बदल चुका था। लेखक का दफ्तर एक शीशमहल जैसे बाक्स-टाईप भवन में पहुँच गया था। उन दिनों लेखक राजौरी गार्डन, दिल्ली में रहते थे। सन् 1975 ई. के आपात्काल में लेखक जगदीशचंद्र सेंसर ऑफिसर के पद पर रहे। सन् 1978 ई. में दूरदर्शन के न्यूज विभाग में नौकरी की और वहीं से सेवानिवृत्त हो गए। नौकरी को उन्होंने सिर्फ जीवन का महज साधन माना। नौकरी के अतिरिक्त वे लेखनकार्य में ज्यादातर व्यस्त रहते।

1.1.8 मित्र-परिवार -

लेखक के व्यक्तित्व पर ही उसका मित्र-परिवार निर्भर होता है। लेखक जगदीशचंद्र आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के न्यूज विभाग से संबंधित होने के कारण विभिन्न ख्यातिप्राप्त लेखक, कवि, प्रकाशक तथा राजनीतिक क्षत्र के बड़े-बड़े नेताओं के साथ अच्छे संबंध रहे। उनके घनिष्ट मित्र सोम आनंद जो 'ऑल इंडिया मेडिकल इन्स्टिट्युट' के डॉक्टर थे। इन्हीं की प्रेरणा से लेखक ने लेखनकार्य जारी रखा।

विनोद शाही के साथ साक्षात्कार में लेखक जगदीचंद्र की पत्नी श्रीमती क्षमा वैद्य ने लेखक के मित्र-परिवार के बारे में बताया कि "रमेश कुंतल मेघ, मेहर गेरा, गौरी शंकर कपूर अब तो वे भी नहीं रहे... और पत्रकारों में सुरिंदर खुल्लार... दिल्ली में देवदत्त आते थे... सोमानंद तो थे ही। देवेंद्र इस्सर और उनकी पत्नी विमल आती थी।"[1] इसके साथ-साथ उनके मित्रों में शिवकुमार शर्मा, डी. आर. कालिया, अजीत अखबार के संपादक साधुसिंह तथा हिंद समाचार ग्रुप के रमेश चंद्र आदि थे। राजनीतिक मित्रों में पूर्व विदेश मंत्री आई. के. गुजराल तथा पंजाब के पूर्वमुख्यमंत्री दरबारा सिंह आदि प्रमुख थे। लेखक जगदीशचंद्र का मित्र-परिवार बहुत ही बड़ा था।

1.1.9 लेखन की प्रेरणा -

लेखक जगदीशचंद्र को लेखन की ओर प्रवृत्त करने का श्रेय उनके घनिष्ठ मित्र सोम आनंद को ही जाता है। तरसेम गुजराल के साथ साक्षात्कार में लेखक जगदीशचंद्र ने अपने लेखन की प्रेरणा बताते हुए कहा कि "गाँव का आम आदमी, जिसे व्यापक अर्थों में जनता कहा जाना चाहिए मेरी प्रेरणा रही है। वहाँ कमजोर आदमी का लगातार शोषण मैं बचपन से देखता आ रहा हूँ और मैं खुद भी इस शोषण का एक हिस्सा रहा हूँ लेकिन अर्थशास्त्र के अध्ययन और फिर मार्क्सवाद के अध्ययन ने मुझे दृष्टि दी, नहीं तो गाँव के दूसरे लोगों की तरह मैं भी जुल्म को भगवान की देन समझता। लेकिन इस दृष्टि से पता चला कि उसका समाधान निकाला जा सकता है।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि किसी भी रचनाकार के लिए लेखन की प्रेरणा उसका तत्कालिन परिवेश होता है।

1.1.10 मृत्यु -

सेवानिवृत्ती के पश्चात् लेखक जगदीशचंद्र पंजाब प्रांत के जालंधर शहर में परिवार के साथ रहने लगे थे। एक प्रगतिशील रचनाकार, गैर-दलित होकर भी दलित समाज की समस्याओं को उठानेवाले ऐसे महान कलाकार की मृत्यु सन् 10 अप्रैल 1996 ई. को जालंधर में हुई। लेखक जगदीशचंद्र की मृत्यु के संदर्भ में विनोद शाही लिखते हैं, "10

---

1. सं. तरसेम गुजराल, विनोद शाही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 44
2. वही, पृष्ठ - 46

अप्रैल की रात को वह एक मित्र के घर जमी महफिल से उठकर घर पहुँचे। अपनी बहु रेखा से कहा, चाय बनाना, फिर पानी पिया और गिर पड़े। पाँच मिनट में सब शांत हो गया।''[1] प्रेमचंद के समान ही लेखक जगदीशचंद्र ने दलित समाज के यथार्थ को न्याय देने का कार्य किया है।

1.1.11 व्यक्तित्व की विशेषताएँ -

लेखक जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व बहुआयामी था। उनके दिल में थोड़ी-सी भी अहं भावना नहीं थी। लेखनकार्य के अतिरिक्त गाना सुनना, फर्निचर बनाना जैसे कामों में विशेष रुचि रखते थे। उनका व्यक्तित्व खुला दस्तावेज था। अपनी नौकरी की व्यस्तता के दौरान भी साक्षात्कार देने के लिए समय निकालते थे। संवेदशीलता एवं भावुकता की झलक लेखक जगदीशचंद्र के समग्र साहित्य में प्रतिबिंबित होती है। लेखक जगदीशचंद्र के व्यक्तित्व की कुछ खास विशेषताएँ यहाँ प्रस्तुत हैं-

1.1.11.1 संवेदनशील -

रचनाकार समाज का एक अंग होता है। समाज के प्रति हर एक रचनाकार संवेदनशील होता है। संवेदनशील रचनाकार ही समाज के यथार्थ को यथातथ्य चित्रित करता है। लेखक जगदीशचंद्र अपने परिवेश एवं समाज के प्रति संवेदनशील थे।

पंजाब प्रांत में दलितों पर हो रहे अन्याय-अत्याचार एवं शोषण को लेखक जगदीशचंद्र ने अपनी आँखों से देखा था। स्वयं उच्चवर्गीय होने के बावजूद दलित समाज के प्रति उनमें करुणा थी। दलितों की यथार्थ स्थिति का चित्रण लेखक जगदीशचंद्र ने अपने साहित्य में किया है। वे अपने पात्रों के साथ जीते थे। 'कभी न छोड़े खेत' उपन्यास का लेखन करते समय नायक शंकर की पिटाई के चित्रण के समय लेखक जगदीशचंद्र की आँखों में आँसू आ गए थे। उनके पास समाज के प्रति संवेदनशीलता थी।

1.1.11.2 लेखन के प्रति निष्ठा -

लेखक जगदीशंचद्र अपने लेखन के प्रति एकनिष्ठ थे। वे लिखने के बाद टाइप करते थे और फिर एक बार देखकर लेखन को अंतिम टाइप करवाते थे। उन्होंने

---

1. सं. तरसेम गुजराल, विनोद शाही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 59

प्रामाणिकता से पंजाब के दलितों की यथार्थ स्थिति का अंकन अपने साहित्य में किया है। जगदीशचंद्र के लेखन के बारे में विनोद शाही के विचार दृष्टव्य हैं- ''जगदीशचंद्र का तमाम लेखन गहरे इतिहास बोध से निकला यथार्थवादी शैली का लेखन था।''[1] लेखक जगदीशचंद्र ने लेखन और नौकरी को सदा अलग-अलग रखा है। वे नौकरी को महज जीविका का साधन मानते थे। इस संदर्भ में लेखक के विचार दृष्टव्य हैं- ''मैंने लेखन और नौकरी दोनों को सदा अलग-अलग रखा है।''[2] इससे लेखक जगदीशचंद्र की लेखन के प्रति निष्ठा दिखाई देती है।

1.1.11.3 मिलनसार व्यक्तित्व -

लेखक जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व मिलनसार रहा है। उनका मित्र-परिवार काफी बड़ा है। पत्रकार तथा साक्षात्कारवालों से वे खुलकर मिलते थे। घर में बेटे के प्रति उनके मन में मित्रता के भाव थे। दोनों बाप-बेटे किसी भी विषय पर घुल-मिलकर बात करते थे। मुहल्ले तथा मैदान में खेल रहे छोट-छोटे बच्चे देखना उन्हें बहुत पसंद था। मिलनसार व्यक्तित्व के कारण ही लेखक जगदीशचंद्र का मित्र-परिवार बड़ा था।

1.1.11.4 साहसी -

साहसी एवं जोखिम भरे कामों मे लेखक जगदीशचंद्र स्वारस्य रखते थे। साहसी प्रवृत्ति के कारण बी. बी. सी. और ए. बी. सी. की न्यूज टीमों के साथ स्वयं लेखक सरहद पर जाते थे। लेखक जगदीशचंद्र के पुत्र पराग वैद्य बताते हैं- ''जब वह बी. बी. सी. और ए. बी. सी. की न्यूज टीमों के साथ सरहद की तरफ गए थे। एक बम उनकी एक टनवाली फौजी गाड़ी पर गिरा और वह बाहर आ गिरे। चोट के कारण काफी दिनों तक उन्हें मिलिट्री अस्पताल में रहना पड़ा था। जब उन्हें जोखिम भरे कामों के लिए निकलने से पहले घर में रोका जाता, वह कहते-मुझे वही गोली लग सकती है, जो मेरे लिए बनी है।''[3] यह सही है कि साहसी वृत्ति के कारण ही लेखक जगदीशचंद्र एक उच्चवर्गीय होते हुए भी पंजाब प्रांत की तत्कालिन दलितों के यथार्थ स्थिति को अपने साहित्य में चित्रण किया है।

---

1. सं. तरसेम गुजराल एवं विनोद साही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 69
2. वही, पृष्ठ - 48
3. वही, पृष्ठ - 15

1.1.11.5 जाति-भेद विरोधी -

भारतीय समाज-व्यवस्था का आधार वर्णव्यवस्था रही है। वर्णव्यवस्था से समाज में जाति-भेद एवं छुआ-छूत प्रथा का प्रचलन बढ़ा था। अतः समाज में लोग जाति-भेद के बंधनों का कड़ाई से पालन करते आए हैं।

पंजाब प्रांत में भी जाति-भेद उच्चकोटि पर था। लेखक जगदीशचंद्र का परिवार उच्चवर्गीय था। बचपन में लेखक जगदीशचंद्र को घोड़वाहा गाँव के दलित बस्ती में जाने पर कुछ परंपराओं का पालन करने के लिए कहा जाता था। दलित बस्ती से गुजरते समय लेखक जगदीशचंद्र की नानी सख्त हिदायत देती थी कि "उस बस्ती में खाट पर बैठना नहीं, किसी को छूना नहीं, जलपान बिल्कुल नहीं करना आदि।"[1] जाति-भेद की समस्या को लेखक जगदीशचंद्र ने अपनी आँखों से देखा था। उन्हें जाति के आधार पर किया जा रहा भेदा-भेद मान्य नहीं था। श्रीमती क्षमा वैद्यजी बताती हैं- "जाति के बंधन को वे नहीं मानते थे। उन्हें इस बात से परहेज नहीं था कि दूसरा हमारी तरह 'शुद्ध ब्राह्मण क्यों नहीं ?"[2] अतः लेखक जगदीशचंद्र ने स्वयं अपनी बेटी आरती का विवाह इंटरकास्ट लड़के से किया था। उन्होने जाति-भेद का विरोध अपने ही घर से किया है।

1.1.11.6 लेखकीय व्यक्तित्व -

रचनाकार के व्यक्तित्व की एक ऐसी विशेषता होती है। जिससे वह अपनी रचना में जो-जो भी त्रूटियाँ, गलतियाँ होती हैं, सहज स्वीकार लेता है तथा उन त्रूटियों को दूर करता है। यह लेखकीय व्यक्तित्व रचनाकार के पास होना आवश्यक है।

लेखक जगदीशचंद्र अपने लेखन के प्रति अहंभाव नहीं रखते थे। वे अपने लेखन की पांडुलिपि अपने मित्र विनोद शाही को पढ़ने के लिए देते थे। विनोद शाही ने जो-जो भी त्रूटियाँ अंकित की थी उन त्रूटियों को वे जल्द ही दूर करते थे। विनोद शाही लिखते हैं- "आज मैंने पहली दफा एक ऐसा प्रतिष्ठित लेखक देखा था, राजकमल और ज्ञानपीठ जैसे प्रकाशनों से धड़ल्ले से छपनेवाला हिंदी लेखक जिसके पास कोई लेखकीय अहम्

---

1. सं. तरसेम गुजराल एवं विनोद शाही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 23
2. वही, पृष्ठ - 43

नाममात्र को नहीं था ।''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि लेखक जगदीशचंद्र के पास लेखकीय व्यक्तित्व था। अपनी त्रूटियों को वे सहर्ष स्विकारते थे।

1.1.11.7 फर्निचर बनाने में माहिर -

लेखक जगदीशचंद्र लेखनकार्य करने के अतिरिक्त खाली समय में फर्निचर बनाने जैसे कामों में व्यस्त रहते थे। वे फर्निचर बनाने में माहिर थे। लेखक की इस रुचि के संदर्भ में श्रीमती क्षमा वैद्य जी ने कहा- ''कार्शीनगर में अपनी पोस्टिंग के दौरान उन्होंने कई चीजें खुद बनाई थीं। सो सारे औजार वगैरा लेकर वे दोबारा इस काम में लग गए और उन्होंने घर के लिए एक बढ़िया स्प्रिंगदार सोफा बना डाला।''[2] इस कथन से स्पष्ट होता है कि वे केवल एक रचनाकार ही नहीं, बल्कि फर्निचर बनाने में माहिर थे।

1.1.11.8 प्रभावित -

लेखक का व्यक्तित्व समाज से प्रभावित होता है। किसी घटना, वस्तु, व्यक्ति आदि का प्रभाव रचनाकार के साहित्य पर प्रतिबिंबित होता है। लेखक जगदीशचंद्र अर्नेस्ट हेमिंग्वे को पसंद करते थे। हेमिंग्वे का उपन्यास 'फॉर हूम द बेल टॉल्स' और शेलाखोव के उपन्यास 'धीरे बहो दोन रे' से लेखक जगदीशचंद्र विशेष प्रभावित हुए। इसके साथ-साथ हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार प्रेमचंद के 'निर्मला' और 'गोदान' उपन्यास से भी वे प्रभावित रहे।

1.1.11.9 समाजवादी यथार्थ के पक्षधर -

लेखक जगदीशचंद्र बचपन से उच्चवर्गियों द्वारा निम्नवर्गियों का हो रहा शोषण देखते आए थे। इसीलिए उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज के सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है। लेखक जगदीशचंद्र सांप्रदायिकता का विरोध करते हैं। वे समाजवादी यथार्थवादी में विश्वास रखते हैं तथा उसके पक्षधर भी हैं।

---

1. सं. तरसेम गुजराल एवं विनोद शाही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 70
2. वही, पृष्ठ - 41

1.2. कृतित्व -

लेखक जगदीशचंद्र जी ने अपने लेखनकार्य की शुरूवात कहानी से की। उनकी पहली कहानी उर्दू में 'अपना घर' जो सन् 1950 में प्रकाशित हुई। ज्यादातर उपन्यास विधा में ही उन्होंने लेखनकार्य किया है। अब तक उनके दस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने अपनी आँखों से जो देखा, अनुभूत किया उसका प्रामाणिकता से चित्रण साहित्य में किया है। लेखक जगदीशचंद्र का रचना-संसार इस प्रकार है -

1.2.1 कहानी साहित्य -

जगदीशचंद्र की पहली कहानी 'अपना घर' उर्दू भाषा में लिखी जो सन् 1950 में प्रकाशित हुई। इसके साथ-साथ एक कहानी संग्रह 'पहली रपट' नामक सन् 1981 में प्रकाशित हुआ। कहानी लेखन के बारे में जगदीशचंद्र लिखते हैं- ''कॉलेज के दिनों में मैंने उर्दू में कुछ कहानियाँ लिखी थी जो 'अदबे लतीफ' और 'शाहराह' जैसे प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी थी। आत्म-अभिव्यक्ति के लिए मैंने एक विधा चुन ली थी।''[1] उक्त कथन से लेखक की कहानी लेखन की दृष्टि स्पष्ट हो जाती है। लेखक जगदीशचंद्र जी ने ज्यादातर कहानियाँ देश-विभाजन पर लिखी हैं।

1.2.2 नाटक साहित्य -

उपन्यास विधा की तरह लेखक जगदीशचंद्र जी ने नाटक विधा में ज्यादह लेखन-कार्य नहीं किया। उन्होंने 'नेता का जन्म' नामक एक ही नाटक लिखा। इसके बाद उन्होंने भगतसिंग पर नाटक लिखना चाहा, परंतु वह अधूरा ही रहा। इस नाटक के बारे में तरसेम गुजराल द्वारा पूछे जाने पर जगदीशचंद्र जी ने कहा- ''शहीद भगतसिंग पर एक नाटक। इसमें भगतसिंह के मानवतावाद को अधिक उभारना चाहता हूँ। हमने भगतसिंग को शहीद बनाकर टाँग दिया है। जनता के प्रति बेपनाह दर्द को समझने की चेष्टा नहीं की। यदि गांधीजी के साथ अफ्रीका में दुर्व्यवहार न हुआ होता वे महात्मा गांधी न बने होते। यदि

---

1. सं. तरसेम गुजराल, विनोद शाही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 27

अजित सिंह घर से न भागे होते तो भगतसिंह, भगतसिंह न होते। अजित सिंह की पत्नी हरनाम कौर की व्यथा ने ही भगतसिंह को भगतसिंग बनाया है।''[1]

1.2.3 उपन्यास साहित्य -

लेखक जगदीशचंद्र जी ने अन्य साहित्यिक विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा में सबसे अधिक लेखनकार्य किया। अब तक उनके दस उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उपन्यास विधा की ओर आकृष्ठ होने का कारण वे स्वयं बताते हैं- ''कहानी से उपन्यास की ओर इसीलिए आया कि कहानी में अपने चरित्रों का विकास नहीं पा रहा था।''[2] यह सही है कि कहानी की अपेक्षा उपन्यास विधा में पात्रों का विस्तार से गठन किया जाता है।

लेखक जगदीशचंद्र के उपन्यासों में 'यादों के पहाड़', 'धरती धन न अपना', 'आधा पुल', 'कभी न छोड़े खेत', 'मुट्ठी भर काँकर', 'टुण्डा लाट', 'घास गोदाम', 'लाट की वापसी' और 'जमीन अपनी तो थी' आदि आते हैं। लेखक जगदीशचंद्र जी ने निम्नवर्ग के यथार्थ को अपनी कृतियों में प्रमुखता से स्थान दिया है। लेखक जगदीशचंद्र के लेखन के संदर्भ में शिवकुमार मिश्र का विचार दृष्टव्य है- ''जगदशीचंद्र उन रचनाकारों में हैं जिन्होंने अपने मानवीय रचनात्मक सरोकारों के बरक्स न केवल परंपरा की चुनौती स्वीकार की, उसे अपनी रचनाशीलता में पुनर्जीवित भी किया, उसमें अपने समय की चिंताओं को नक्श करते हुए अपने समय के लिए तो सार्थक बनाया ही, उसे आगे की रचनाकार पीढ़ियों के लिए सुलभ किया है।''[3] यह सही है कि लेखक जगदीशचंद्र जी का साहित्य तत्कालिन परिस्थितियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है।

लेखक जगदीशचंद्र के उपन्यास संसार का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1.2.3.1 यादों के पहाड़ -

सर्व प्रथम 'पूरा आदमी' इस शीर्षक से लिखा गया यह उपन्यास था, परंतु बाद में सन् 1966 में 'नेशनल पब्लिशिंग हाऊस' से 'यादों के पहाड़' इस नाम से प्रकाशित हुआ। प्रकृति का यथावत चित्रण इसमें हुआ है। यह उपन्यास सफल सिद्ध नहीं हुआ।

---

1. सं. तरसेम गुजराल एवं विनोद साही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 53
2. वही, पृष्ठ - 47
3. वही, पृष्ठ - 85

1.2.3.2 धरती धन न अपना -

लेखक जगदीशचंद्र का सबसे प्रसिद्ध उपन्यास के रूप में 'धरती धन न अपना' का नाम लिया जाता है। जिसका प्रकाशन 'राजकमल प्रकाशन' नई दिल्ली से सन् 1972 में हुआ। रूसी, उर्दू, पंजाबी, जर्मन और अंग्रेजी भाषा में भी अनुदित हुआ है।

प्रस्तुत उपन्यास का आरंभ नायक काली के शहर से गाँव लौटने से होता है। काली दलित युवक है। अपने पिता का पक्के मकान का सपना पूरा करते समय उसे अपने बिरादरी तथा उच्चवर्गियों के क्रोध का सामना करना पड़ता है। पूँजीपति तथा जमींदारों द्वारा हो रहे अन्याय-अत्याचार एवं शोषण से घोड़ेवाहा गाँव की जनता पीड़ित है। उनमें चेतना लाने का असफल प्रयास काली के द्वारा होता है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास के संदर्भ में रमेश कुंतल मेघ कहते हैं- ''यह कृति धरती के दुखियारों का एक समाजार्थिक दस्तावेज बन गई है।''[1] यह सही है कि लेखक जगदीशचंद्र ने दलितों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है। अतः 'धरती धन न अपना' उपन्यास द्वारा दलित चेतना को जगाने का प्रयास लेखक ने किया है।

1.2.3.3 आधा पुल -

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन से सन् 1973 में प्रस्तुत उपन्यास प्रकाशित हुआ। 'आधा पुल' उपन्यास भारत-पाकिस्तान युद्ध को लेकर रचा गया है।

'आधा पुल' उपन्यास में युद्ध के दरम्यान कैप्टन इलावत के साथी पाँच जवान और एक जे. सी. ओ. शहीद हो जाते हैं। अपने साथियों की मृत्यु के पश्चात् कैप्टन इलावत पुल को उड़ा देता है, जिस पर पाकिस्तानी सैनिकों ने कब्जा किया था। इस युद्ध में कैप्टन इलावत की मौत हो जाती है। दूसरी ओर कैप्टन इलावत सेमी से मुहब्बत करता था, परंतु इलावत की मौत से दोनों की प्रेम कहानी अधूरी रह जाती है। यह उपन्यास भारतीय सैनिक एवं अफसरों की वास्तविक जिंदगी पर प्रकाश डालता है।

---

1. सं. तरसेम गुजराल एवं विनोद शाही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 97

1.2.3.4 कभी न छोड़े खेत -

'कभी न छोड़े खेत' उपन्यास सन् 1976 ई. में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में संपन्न जाट किसानों के आपसी टकराव और ऋणशोध की कहानी है जिसमें पुलिस और अदालत की यातनाओं का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है।

1.2.3.5 मुट्ठी भर काँकर -

प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन सन् 1976 में हुआ। देश विभाजन के बाद दिल्ली में आनेवाले शरणार्थियों की भीड़ को बसाने के सिलसिले में खेती की भूमि के अधिग्रहण, किसानों की बेदखली और शहरीकरण की प्रक्रिया में आनेवाली तेजी की कहानी है।

देश-विभाजन के बाद पंजाबी शरणार्थियों का पुनर्वसन दिल्ली के आस-पास किया जाता है। जिससे पूर्व स्थित जाट किसानों को अपनी ही जमीन से बेदखल किया जाता है। यह शरणार्थी भयंकर तबाही झेलने के बावजूद अपनी जिजीविषा, कर्मठता, गतिशीलता और साहसिकता में इतने अक्रामक थे कि उनके सामने धीमी गति की जिंदगी जीनेवाले किसान टिक नहीं पाए। पंजाबी शरणार्थी अपने साथ एक गतिशील जिंदगी, जीविका की नई तकनीक, नये जीवन-मूल्य तथा संस्कृति लेकर आए थे जिसने जाटों की दम तोड़ती, परंपरागत सामंती और कृषि समाज-व्यवस्था तथा मूल्य-मान्यताओं को ध्वस्त कर दिया था।

1.2.3.6 टुण्डा लाट -

'टुण्डा लाट' उपन्यास का प्रकाशन सन् 1978 में हुआ। एक सैनिक के जीवन की त्रासदी का चित्रण 'टुण्डा लाट' उपन्यास में किया है। कैप्टन सुनील कपूर युद्ध के दौरान बर्फ की खाई में गिर जाते हैं जिससे उनके दाहिने हाथ की उँगलियाँ बेकार हो जाती हैं। अपने दाहिने हाथ की उँगलियाँ गवाने से वह युद्ध तथा कला साधना दोनों के लिए बेकार हो जाता है। उँगलियाँ गँवाने के कारण सुनील कपूर को अपनी वायलीन बजाने की कला से दूर रहना पड़ता है। सुनील कपूर के अपाहिज होने पर उसकी प्रेमिका रोमिला उसका साथ छोड़ देती है। एक सैनिक को मरते दम तक अपाहिज जिंदगी बितानी पड़ती है। यह उपन्यास एक अपाहिज सैनिक के जीवन का दस्तावेज है।

1.2.3.7 घास गोदाम -

'घास गोदाम' उपन्यास का प्रकाशन सन् 1985 ई. में हुआ। प्रस्तुत उपन्यास में पंजाबी शरणार्थियों के पुनर्वास और स्थानीय आबादी के विस्थापन से उत्पन्न समस्याओं, संबंधों, सहयोग-असहयोग, द्वंद्व और तनाव की मानसिकता की कहानी बहुत ही आत्मीयता के साथ प्रस्तुत की गई है। जगदीशचंद्र कहते हैं- ''उपन्यास में शहर गाँव को निगल रहा है। दिल्ली में जिन दिनों कीरती नगर, राजा गार्डन, राजौरी गार्डन, तिलक नगर, रमेश नगर बसे हैं, मैंने उस निर्माण की एक-एक हरकत को बड़े ध्यान में रखा है। बहुत सस्ती जमीनें लेकर वे लोग किसी तरह मुनाफा कमाते हैं, इसका अनुभव तभी मुझे हुआ।''[1] यह सही है कि दिल्ली के विस्तार के फलस्वरूप किसानों की जमीनें बिक जाने से ढेर सारे पैसे मिले, परंतु वे किसान अपनी नई जिंदगी की शुरूवात नहीं कर सके।

1.2.3.8 नरककुण्ड में बास -

'नरककुण्ड में बास' उपन्यास सन् 1994 में प्रकाशित हुआ। 'धरती धन न अपना' उपन्यास की अगली कड़ी के रूप में यह उपन्यास माना जाता है। 'नरककुण्ड में बास' उपन्यास के संदर्भ में कुंवरपाल सिंह के विचार दृष्टव्य हैं- ''नरककुण्ड में बास' भूमिहीन और दलित व्यक्ति की समाज में क्या स्थिति है, उसका विविध आयामों से चित्रण है। काली की नियति व्यक्ति ही नहीं, सर्वहारा व्यक्ति की नियति है, जिसे न गाँव सम्मान का जीवन दे रहे हैं और न शहर, वह नरक दर नरक भटक रहे हैं।''[2] यह सही है कि प्रस्तुत उपन्यास का नायक काली गाँव छोड़कर जालंधर आता है। काली शहर में काम की तलाश में भटकता है, किंतु उसे काम नहीं मिलता क्योंकि शहर में बिना पहचान के कोई काम नहीं देता। इस सत्य को मिस्त्री ध्यान सिंह काली से उजागर करता है- ''शहर में हर परदेशी को चोर-उचक्का समझा जाता है। काम उसी को मिलता है जिसका कोई अपना सरनामा हो, कोई आता-पता हो, कोई वाली-वारिस हो। वहाँ तो लोग गली के बाहर के कुत्ते को भी टुकड़े नहीं डालते, परदेसी को काम के लिए घर में कैसे घुसने देंगे।''[3] यह स्पष्ट होता है कि नगरो-

---

1. सं. तरसेम गुजराल एवं विनोद साही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 49
2. वही, पृष्ठ - 123
3. जगदीशचंद्र - नरककुण्ड में बास, पृष्ठ- 62

महानगरों में किसी भी व्यक्ति पर विश्वास नहीं रखा जाता। बल्कि किसी का शिफारिश पत्र, पहचान से व्यक्ति को नौकरी मिल सकती है। बदलते मानवीय मूल्यों के कारण समाज में व्यक्ति के स्थान में भी परिवर्तन हो रहे हैं।

1.2.3.9 लाट की वापसी -

'लाट की वापसी' उपन्यास 'टुण्डा लाट' उपन्यास की आगे की कथा है। प्रस्तुत उपन्यास का प्रकाशन लेखक जगदशीचंद्र के मरणोपरांत सन् 2000 में हुआ है।

कैप्टन सुनील कपूर के हाथ की उँगलियाँ कट जाने से अपाहिज जीवन जीना पड़ता है। युद्ध से आज तक किसी को भी शांती-सुख नहीं मिला। युद्ध के बाद कैप्टन सुनील कपूर अपने हाथों से न ही बंदूक उठा सकता है और न ही वायलीन बजा सकता है। युद्ध की विभीषिका का यथातथ्य दर्शन यहाँ पर कैप्टन सुनील कपूर की अपाहिज जिंदगी से होता है।

'लाट की वापसी' उपन्यास में युद्ध की विभीषिका के बारे में मेजर राजगोपालन के विचार दृष्टव्य हैं- ''दो लड़ाइयाँ लड़ने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि लड़ाई अच्छी नहीं है। ठीक है, इसमें एडवेंचर है। प्रोफेशनल स्किल दिखाने का मौका मिलता है। देश के प्रति अपनी नमक हलाली साबित की जा सकती है। लेकिन बाद में होता क्या है- जिस कौज को ले लड़ाई लड़ी जाती है, वह वहीं का वहीं रहता है और पहली लड़ाई का लौजिक (तर्क) अगली लड़ाई की नींव रख देता है।''[1] यह सही है कि एक युद्ध खत्म होने पर उसी से दूसरा युद्ध का निर्माण होता है। यह पूरी दूनिया ने दो विश्वयुद्धों के बाद जाना है। आज भी विश्व के सामने तीसरे महायुद्ध की समस्या खड़ी है।

1.2.3.10 जमीन अपनी तो थी -

'जमीन अपनी तो थी' उपन्यास का प्रकाशन सन् 2001 में हुआ। 'धरती धन न अपना' उपन्यास की तीसरी कड़ी के रूप में 'जमीन अपनी तो थी' उपन्यास देखा जाता है।

प्रस्तुत उपन्यास में काली के शहर जाकर रहने और पारिवारिक जीवन का चित्रण है। काली के विवाह के बाद उसका ज्ञान नामक बेटा आई. ए. एस्. बन जाता है, परंतु

---

1. जगदीशचंद्र - लाट की वापसी, पृष्ठ - 49

ज्ञान अपने दलित बांधवों को भूल जाता है। काली अपने बेटे के पास अपनी छोटी कुटिया छोड़कर रहने के लिए जाता है। वहाँ का विसंगति युक्त वातावरण देखकर काली का दम घोंटता है। हर बात पर अपने ही बेटे से अपमानित होने पर काली को बहुत दुःख होता है। अपनी सारी आकांक्षाओं-अपेक्षा को ध्वस्त होते देखकर काली अपने गाँव वापस जाना चाहता है। इस संदर्भ में विनोद शाही लिखते हैं- ''काली का यह सेल्फ-कार्टून ऐसा है कि इस पर आप न हंस सकते हैं न रो सकते हैं और न ही तठस्थ बने रह सकते हैं।''[1]

1.3 प्राप्त सम्मान -

लेखक जगदीशचंद्र जी ने हिंदी साहित्य के लिए अमूल्य ऐसा योगदान दिया है। विभिन्न पुरस्कारों से उन्हें सम्मानित किया है। उनके सम्मान इस प्रकार हैं-

1. गुरु गोविंद सिंह हिंदी पुरस्कार - सन् 1972
2. पंजाब सरकार के 'शिरोमणि साहित्यकार' सम्मान - सन् 1981

इसके अतिरिक्त कुछ और सरकारी एवं गैर-सरकारी पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं।

1.4 अन्य -

लेखक जगदीशचंद्र की कुछ रचनाएँ अन्य भाषाओं में भी अनूदित हुई हैं। उनका 'धरती धन न अपना' उपन्यास रूसी, पंजाबी एवं जर्मन भाषा में अनूदित हुआ है।

'आधा पुल' उपन्यास अंग्रेजी में अनूदित हुआ है। 'कभी न छोड़े खेत' उपन्यास के नाट्य-रूपांतर का राष्ट्रीय नाट्य-विद्यालय रंगमंडल की ओर से दिल्ली में सन् 1984-85 में रंगमंच पर खेले गए हैं।

निष्कर्ष -

लेखक जगदीशचंद्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व देखने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि लेखक जगदीशचंद्र का व्यक्तित्व बहुआयामी था। इनका जन्म 23 नवंबर, 1930 को घोड़ेवाहा नामक ग्राम में हुआ था। लेखक का बचपन उनके ननिहाल रलहन गाँव में बीता। बचपन से ही समाज में प्रचलित जातिभेद देखकर उनको बहुत दुःख होता था।

---

1. सं. तरसेम गुजराल एवं विनोद साही - जगदीशचंद्र : एक रचनात्मक यात्रा, पृष्ठ - 171

घर का माहौल उच्चवर्गीय होने की वजह से जाति-भेद के बंधनों का कड़ाई से पालन किया जाता था। फिर भी लेखक चोरी-छिपे अपना दलित मित्र अमरचंद के घर जाकर खाना खाते थे। उन्हें गाँव के प्रति लगाव था। जगदीशचंद्र का पारिवारिक जीवन सफल रहा। श्रीमती क्षमा वैद्य ने अपने पति के लेखनकार्य में कोई बाधा उत्पन्न न कर लेखक जगदीशचंद्र को प्रोत्साहन ही दिया।

अर्थशास्त्र का छात्र होते हुए भी लेखक जगदीशचंद्र ने हिंदी साहित्य के लिए अमूल्य ऐसा योगदान दिया है। ज्यादातर उपन्यास विधा में लेखन-कार्य किया है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में उन्होने काली के माध्यम से दलित चेतना का चित्रण किया है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास के प्रकाशन से दलित और गैर दलित साहित्य के क्षेत्र में दूरी है वह मिटने में काफी सहायता मिली।

सेंसर आफिसर, न्यूज विभाग तथा आकाशवाणी से संबंध होने की वजह से उनका मित्र-परिवार काफी बड़ा है। साहित्यिक लेखकों से लेकर राजनीतिक नेता लोग भी लेखक जगदीशचंद्र को अच्छी तरह से जाानते-पहचानते हैं। मिलनसार एवं साहसी व्यक्तित्व से जानते-पहचानते हैं। मिलनसार एवं साहसी व्यक्तित्व से वे लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते थे। लेखक जगदीशचंद्र को 'गुरु गोविंद सिंह हिंदी पुरस्कार' तथा पंजाब सरकार के 'शिरोमणि साहित्यकार सम्मान' प्राप्त हुए। दलित समाज के यथार्थ को यथावत चित्रित करनेवाले साहित्यकार लेखक जगदीशचंद्र की मृत्यु 10 अप्रैल 1996 ई. में जालंधर में अकस्मात हुई। उन्हें किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं थी। शरीर से वे एकदम चुस्त थे।